

---

# Rashtraganam

---

## राष्ट्रगानम्

---

### Document Information



---

Text title : Rashtraganam

File name : rAShTragAnam.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc\_z\_misc\_general

Author : Kapiladeva Dwivedi

Proofread by : Mandar Mali

Translated by : Mandar Mali

Description/comments : Rashtragitanjali, Kapiladeva Dwivedi (Ed.)

Acknowledge-Permission: Kapiladeva Dwivedi, Vishvabharati Anusandhan Parishad, Varanasi

Latest update : May 1, 2020

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 31, 2020

*sanskritdocuments.org*

---



राष्ट्रगानम्



(गीतिका) (मात्रासमक जाति)  
जन-गण-मङ्गलदायक । जय हे ।  
भारतदेश । सदा तव जय हे ।  
ज्ञान-ज्योतिरयममृत-सूति  
शक्ति-भक्ति-हृत गौरव-भूति ॥ जन ॥ ।  
खग-रव-पूर्ण सुषमाऽऽकीर्ण  
शस्य-श्यामलो गरिमोत्कीर्णम् ।  
विश्वज्ञानदा विश्व-प्रेम-दा  
विश्व-शान्ति-बन्धुत्व-भावदा ॥ जन० ॥  
हिमगिरि-शोभित-मञ्जुल-मूर्ति  
विन्ध्य-शैल-शिखरार्चित-भूति ।  
गङ्गा-यमुना सिन्धु-नर्मदा  
ताप्ती-कृष्णा-जलरव-हृद्य ॥ जन० ॥  
उत्कल-बङ्ग-पञ्चनद-पुष्टः  
असम-बिहार-हार-सज्जुष्टः ।  
उत्तर-मध्य-देश-सपुष्टः,  
गुर्जर-राजपुत्र-सहृष्टः ॥ जन० ॥  
आन्ध्रदेश-तमिलार्पित शक्ति  
महाराष्ट्र-कृत-गौरव-पूर्ति ।  
कर्णाटक-कृत-गति-लय-रम्य  
केरल-सुषमा-प्रतिपल-हृद्य ॥ जन० ॥  
षष्टि-कोटि-जन-मङ्गल-घोषम्,  
वेद-चारु-ध्वनि-सहृत-दोषम् ।  
शौर्य-धैर्य-बल-सहृत-रोषम्,

मुक्ता-मणि-गण-सञ्चित-कोषम् ॥ जन० ॥

आर्य-पारसी-यवन-सिरख-जन-

खिस्त-बुद्ध-जिन-मत-मन्तारम् ।

ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्रजन

सहृत्-भेद-भाव-सञ्चारम् ॥ जन० ॥

तव आह्वान-समर्पित-देहा

वीरास्त्यक्त-धान्य-धन-गेहा ।

तव चरणार्पित-जीवन-स्नेहा

धन्यास्ते बलिदान-प्रवीणा ॥ जन० ॥

स्नेहपुञ्ज है । शक्तिपुञ्ज है ।

ज्ञानपुञ्ज है ! गौरव-मूर्ति ।

क्रान्ति-दीक्षया देहि चेतना

शान्ति दीक्षया हर भव-तापम् ॥ जन० ॥

ज्योतिमय हे भुवन-भास्कर ।

पास-नाश भय-दोष सहर ।

भ्रातृभाव-समता-ममतापा

प्रतिपलमविचल-भाव समर ॥ जन० ॥

Proofread by Mandar Mali

---



*Rashtraganam*

pdf was typeset on May 31, 2020



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

